जन्म:- 31 जुलाई, 1880 स्वर्गवास 8 अक्टूबर 1936

• प्रेमचन्द •

प्रथम अध्याय :- प्रेमचंद : व्यक्तित्व और कृतित्व।

अ] जीवन रेखा

१] प्रेमचंद का जन्म
२] माता-पिता
३] शिक्षा
४] विवाह
५] नौकरी
६] मृत्यु

आ] व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू

१] कठोर परिश्रमी
२] सच्चे समाज सुधारक
३] देशभक्त
४] कलम के सिपाही

इ] कृतित्व [प्रकाशित रचनाएँ]

१] उपन्यास
२] कहानी
३] नाटक
४] निबंध
५] अनुवाद ग्रंथ
६] शिशु साहित्य
७] पत्र-पत्रिकाएँ

प्रेमचंद : व्यक्तित्व और कृतित्व।

मुंशी प्रेमचंद कराहती मानवता के साहित्यकार थे। अभाव, उत्पीडन, शोषण, अन्याय, अत्याचार और गरीबी के ज्वलंत घावों को जितना विशद, व्यापक और सफल चित्रण प्रेमचंद ने किया है, उतना हिंदी का शायद ही कोई अन्य साहित्यकार कर पाया हो। इस सफलता का एक बडा कारण यह है कि स्वयं प्रेमचंद का जीवन अभावों, गरीबी के कटु अनुभवों, कष्टों और संघर्षों का जीवन रहा है। "जिस साहित्यकार की आत्मा जितना अधिक आत्मक्रन्दन करती है, जर्जर जीवन की भट्टी में जितना अधिक जलती है, युग-आघातों को जितना अधिक सहती है और जीवन की चक्की में पिसती हुई जितनी ही अधिक मर्म-व्यथा की निजी अनुभूतियाँ प्राप्त करती है, उतनी ही अधिक सच्चाई से वह साहित्यकार दु:खी मानवता का अहाकार अपनी रचनाओं में प्रस्तुत कर सकता है। " [१]

अ] जीवन रेखा -

१] प्रेमचंद का जन्म-

"प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई सन् १८८० को बनारस से चार मील दूर लमही गाँव में हुआ था। " [२]

२] माता-पिता-

"प्रेमचंद के पिता का नाम-अजायबराय और माता का नाम-आनंदी था। " [३] पिता अजायबराय डाकखाने में मामूली नौकर थे। उनके पारिवारिक जीवन में अनेक विषमताएँ आरंभ से अन्त तक व्याप्त रही। साधारणत: बच्चों को अपने माता-पिता से खेल-खिलौने के लिए जितने थोडे से पैसे उनके माता-पिता द्वारा मिला करते हैं, प्रेमचंद . . उनसे भी वंचित रह जाते थे। प्रेमचंद पतंग के शौकीन थे, परंतु कानकौवे तथा डोर खरीदने के लिए उनके पास पैसे ही न जुड पाते थे। "पिता के जीवन काल में उन्हें कभी

१२ आने से अधिक का जूता तथा चार आने गज से अधिक का कपडा नसीब न हुआ।" [४]

पिता की उपरी आय भी न थी, जिससे ये सब खर्च चल पाते। "वे अपने पूरे परिवार के साथ एक गन्दी कोठरी में बसर करते थे, जिसका मासिक किराया केवल डेढ रुपया था।" [५]

३] शिक्षा-

प्रेमचंद के पास अपनी पढाई के लिए पैसे नहीं थे। अरमान था वकील बनने का, एम० ए० करने का। पर साधन कोई नहीं। जीवन अधूरे अरमानों, अपूर्ण साधों की ही कहानी बना रहा। "फटे-हाल, नंगे पांव प्रेमचंद गाँव से चार कोस दूर बनारस पढने आते थे। भोजन के नाम पर चना चबेना ही बाँध लाते। सुबह घर से आते, रात को चकना चूर हो घर आते।" [६]

आखिर एक वकील के यहाँ ५ रुपये महावार की ट्यूशन मिल गई। आने-जाने की परेशानी से तंग आकर वहीं वकील साहब की कोठरी में रात को सोने लगे। ५ रुपये में से ३ रुपये घर भेजने पडते। २ रुपये में महिना-भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते।

प्रेमचंद की आर्थिक विपत्तियों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि "उन्हें अपना कोट बेचना पडा, पुस्तके बेचनी पडी थी।" [७] एक दिन वे एक पुस्तक विक्रेता की दुकान पर पुस्तक बेचने गये थे वहाँ पर एक स्कूल के हेडमास्टर से भेंट हो गई जिन्होंने कृपा करके प्रेमचंद को अपने स्कूल में अध्यापक नियुक्त कर लिया।

४] विवाह-

"प्रेमचंद १५ साल के ही थे कि पिता ने उनकी शादी कर दी। इस शादी के एक साल बाद पिता की मृत्यु हो गई थी।" [८] सन १९०४-५ में `हम खुर्मा व हम सवाब` नामक उपन्यास निकले, जिनमें विधवा-जीवन और विधवा-समस्या का चित्रण हुआ। इन दिनों प्रेमचंद का ध्यान विधवा-समस्या

पर विशेष था। पारिवारिक कटुताओं के कारण प्रेमचंद पत्नी से नहीं निभा पा रहे थे। उनकी पत्नी मैके चली गई-शायद सदा के लिए। "सन १९०५ में ही विधवा जीवन के प्रति कारुणिक भाव के कारण ही प्रेमचंद ने शिवरानी देवी नामक एक बाल-विधवा से दूसरी शादी कर ली।" [९] यह विधवा-विवाह सामाजिक परंपराओं के प्रति प्रेमचंद की विद्रोही आत्मा की जीवन में क्रियात्मक प्रथम अभिव्यक्ति कही जा सकती है। काफी समय तक प्रेमचंद अपनी पहली पत्नी के पास भी थोडा-बहुत खर्चा भेजते रहे।

शिवरानी देवी से शादी करके प्रेमचंद के जीवन में कुछ शांति के क्षण आए। उनके लेखन में भी सजगता आ गई। जीवन में कुछ आर्थिक निश्चितता भी आई।

५] नौकरी-

"प्रेमचंद स्कूलों में डिप्टी इन्स्पेक्टर बन गये थे।" [१०] देशभक्ति की भावना से भरकर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन की आवाज पर अपनी बीस साल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया। प्रेमचंद के जीवन में यह दूसरा क्रियात्मक विद्रोह था। विधवा-विवाह रचना पहला विद्रोह था जो समाज की परंपरागत लकीरों के प्रति था। यह दूसरा विद्रोह राजनैतिक था जो ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों के प्रति था।

बाद में प्रेमचंद ने एक स्कूल में नौकरी की काशी विश्वविद्यालय में अध्यापक बने, पर कहीं न पटी। प्रेमचंद स्वाभिमानी प्रकृति के व्यक्ति थे। पैसे के लोभ में वे कहीं बिक नहीं सकते थे। यही कारण है कि नौकरी करने के सिलसिले में उनकी कहीं नहीं निभी। "सन १९२४ में अलवर राज्य ने उन्हें अपने यहाँ बुलाया था और ४०० रुपये मासिक वेतन, बँगला और कार अलग देने का प्रलोभन दिया था। पर प्रेमचंद ने यह ऑफर स्वीकार न की।" [११]

सन १९३४ में बम्बई के अजन्ता मूवीज से आठ-नौ हजार रुपये साल का

आमंत्रण मिला। अपना उद्देश्य पूरा करने के इरादे से गाँव-गाँव में अपने उपन्यासों और कहानियों के प्रचार का मंसूबा बाँधकर प्रेमचंद चले गये। परंतु फिल्मी दुनिया की वास्तविकता से प्रेमचंद जल्दी ही परिचित हो गए। सेवासदन' उपन्यास की' बाजारे-हुस्न' नाम से फिल्म बनी। उनकी' मिल मजदूर' कहानी' मजदूर' नामक चित्र में रूपान्तरित हुई।" [१२] परंतु प्रेमचंद वहाँ सन्तुष्ट न रहे। फिल्म डायरेक्टरों की मनमानी उन्हें पसंद नहीं आई। अत: शीघ्र ही फिल्मी दुनिया से लौट आये।

६] मृत्यु -

आर्थिक कष्टों तथा इलाज ठीक न कर सकने के कारण।" ८ अक्तुबर सन् १९३६ को " १३ रोग-शैया पर ही वह दिप बुझ गया। जिसने अपनी जीवन की बत्ती को कण-कण में जलाकर हमारा पथ आलोकित किया।

आ] व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू-

१] कठोर परिश्रमी-

प्रेमचंद कठोर परिश्रमी थे। यह पता हमें इस बात से चलता है। पिता की मृत्यु के बाद घर के सभी लोगों का भार बालक प्रेमचंद पर आ पडा। फिर भी वे कठोर परिश्रम करने से घबराए नहीं। घर में फूटी कौडी नहीं थी। घरमें सौतेली माँ सौतेले दो भाई तथा पत्नी आदि का पेट भरने की जिम्मेदारी प्रेमचंद पर थी। प्रेमचंद की मन से यह इच्छा थी कि वकील बन जाय लेकिन घर में पैसों की कमी थी। फटे-हाल, नंगे पाँव गाँव से चार कोस दूर बनारस पढने प्रेमचंद जाते थे। भोजन के नामपर सिर्फ चने खाकर दिन बिताते थे। प्रेमचंद को अपनी पढाई पूरी करने के लिए कोट बेचना पडा। पुस्तके बेचनी पडी।

२] सच्चे समाज सुधारक-

अगर हम प्रेमचंद को समाज सुधारक कहेंगे तो गलत नहीं होगा। अपने उपन्यास के व्दारा वे समाज की कुप्रथाओं का चित्रण करके समाज सुधार करना चाहते थे। " मैं उपन्यास को ही मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। " [१३] अपने उपन्यास को माध्यम बनाकर प्रेमचंद ने अनेक सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया। जिस से समाज का ध्यान आकर्षित हो। ` विधवा-समस्या`, ` किसान-समस्या`, ` विवाह-समस्या`, `वेश्या-समस्या` आदि कई समस्याओं पर प्रकाश डाल कर समाज में सुधार करना चाहते हैं।

३] देशभक्त -

गांधीजी के असहयोग आन्दोलन की आवाज पर बीस साल की नौकरी से प्रेमचंद ने इस्तीफा दे दिया इससे उनकी देशभक्ति की भावना प्रकट होती है।" सन १९०७ में उनकी पाँच कहानियों का संग्रह` सोजेवतन` [वतन का दु:ख दर्द] नाम क से छपा। " [१४] अंग्रेज शासकों को इसमें विद्रोह की बू आई। पुस्तक जब्त कर ली गई। लेखक नवाबराय की खोज-ढूँढ हुई। पहले प्रेमचंद नवाबराय इस नाम से साहित्य रचना करते थे। आखिर पता लग ही गया। प्रेमचंद को बुलाया गया। कल्पना कीजिए किसी लेखक के सामने उसकी रचना जला दी जाय और उसपर बिना आज्ञा न लिखने का बन्धन लगा दिया जाय, तो उस पर क्या गुजरी होगी।

देश-प्रेम की उत्कट भावना प्रेमचंद के अन्तकरण में व्याप्त थी। देश की सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ वे राजनैतिक समस्या के प्रति भी आरंभ से सजग थे। अपने साहित्यिक जीवन के आरंभ-काल में ही` सोजे-वतन`

जैसी रचना करना इस बात का सबूत है।

४] कलम के सिपाही-

प्रेमचंद एक मात्र कलम के ही सिपाही थे। साहित्य निर्माण के पीछे धन कमाना उनका उद्देश्य नहीं था। अपने कालम के द्वारा वे समाज को जागृत करना चाहते थे। प्रेमचंद स्वाभिमानी प्रवृत्ति के थे। पैसे के मोह में वे कहीं नहीं बिक सके। सन १९२४ में उन्हें अलवर राज्य ने बुलाया था जिसे हम पहले देख चुके है। वहाँ उन्हें ४०० रुपये वेतन, बँगला और कार देने का प्रलोभन दिया लेकिन कलम के सिपाही प्रेमचंद कहीं बिक सकते थे ?

बंबई के अजंता मुवीज का आमंत्रण मिला उसे उन्होंने स्वीकार किया। लेकिन उनका उद्देश्य अलग था। वहाँ जाकर अपने कलम से निर्माण किया हुआ साहित्य से समाज सुधार करना चाहते थे, लेकिन फिल्म डायरेक्टरों की मनमानी उन्हें पसंद न आयी और वे वापस आ गये।

इ] कृतित्व [प्रकाशित रचनाएँ]

१] उपन्यास-

प्रेमचंद ने कूल मिलाकर दस उपन्यास लिखे। "`प्रतापचन्द` और `वरदान` एक ही रचना के दो रूप है तथा `प्रतिज्ञा`,`प्रेमा`और` हम खर्मा व हम सवाब` एक ही विषय की अलग-अलग रचनाएँ हैं। अंतिम अप्रकाशित : : रही और अब अप्राप्य है। इसी प्रकार संभवता` श्यामा` और` कृष्णा` भी : एक ही रचना के दो नाम प्रचलित हो गए होंगे। ये दोनों भी अप्राप्य हैं।" [१५]

डॉ. कृष्णदेव झारी के अनुसार प्रेमचंद के कालक्रमानुसार निम्नलिखित उपन्यास मिलते हैं।

१]	वरदान	सन	१९०२
२]	प्रतिज्ञा	सन	१९०६
३]	सेवासदन	सन	१९१६
४]	प्रेमाश्रम	सन	१९२२
५]	निर्मला	सन	१९२३
६]	रंगभूमि	सन	१९२४
७]	कायाकल्प	सन	१९२८
८]	गबन	सन	१९३०
९]	कर्मभूमि	सन	१९३२
१०]	गोदान	सन	१९३६
११]	मंगलसूत्र	सन	१९३६ [अपूर्ण]

२] कहानी-

प्रेमचंद ने ३५० से भी ज्यादा कहानियाँ लिखी हैं।

१] मानसरोवर [आठ भागों मे]
२] प्रेम-पूर्णिमा
३] प्रेम-पचीसी
४] सप्त सरोज
५] पांच फूल
६] कफन
७] समर यात्रा
८] ग्राम्य जीवन की कहानियाँ
९] नारी जीवन की कहानियाँ

३] नाटक-

१] संग्राम
२] कर्बला
३] प्रेम की वेदी

४] निबंध-

१] कुछ विचार

२] तलवार और त्याग

५] अनुवाद ग्रंथ -

१] न्याय

२] हडताल

३] अहंकार

४] चांदी की डिबया।

६] शिशु साहित्य-

१] कुत्ते की कहानियाँ

२] जंगल की कहानियाँ

७] पत्र-पत्रिकाएं-

१] जागरण

२] हंस

निष्कर्ष-

निश्चय ही प्रेमचंद का आगमन हिंदी साहित्य के लिए ही नहीं, अपितु भारतीय साहित्य के लिए वरदान-सादृश्य सिध्द हुआ। वे हमारे सांस्कृतिक गुरु थे। नव भारत के निर्माण में उनका योग किसी राजनैतिक या सामाजिक नेता से कम नहीं हैं। जो कार्य राजनीति के क्षेत्र में गांधीजी-जैसे राजनीतिज्ञ नेता ने किया वही कार्य साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंदजी द्वारा सम्पन्न हुआ। अपने व्यक्तिगत जीवन तथा युग-जीवन से बहुत-कुछ पाकर उन्होंने सब-कुछ अपने युग और भावी युग को दे दिया, अपने निज के लिए कुछ भी नहीं रखा, कुछ भी नहीं चाहा।

= संदर्भ सूची =

१] डॉ. कृष्णदेव झारी - प्रेमचंद की उपन्यास-कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. ९

२] डॉ. कृष्णदेव झारी - प्रेमचंद की उपन्यास-कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. ११

३] जैनेंद्रकुमार - प्रेमचंद एक कृता व्यक्तित्व पृ. क्र. १५

४] राकेश - प्रेमचंद और गोदान- पृ. क्र. १३

५] राकेश - प्रेमचंद और गोदान पृ. क्र. १३

६] राकेश - प्रेमचंद और गोदान पृ. क्र. १४

७] डॉ. कृष्णदेव झारी - प्रेमचंद की उपन्यास कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. १२

८] डॉ. कृष्णदेव झारी - प्रेमचंद की उपन्यास कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. ११

९] तत्पेंद्र - प्रेमचंद पृ. क्र. १०

१०] डॉ. कृष्णदेव झारी - प्रेमचंद की उपन्यास कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. १२

११] डॉ. कृष्णोदव झारी - प्रेमचंद की उपन्यास कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. १३

१२] डॉ. कृष्णोदेव झारी - प्रेमचंद की उपन्यास कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. १३

१३] प्रेमचंद - कुछ विचार पृ. क्र. ३८

१४] डॉ. कृष्णदेव झारी-प्रेमचंद की उपन्यास कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. १२

१५] डॉ. कृष्णदेव झारी-प्रेमचंद की उपन्यास कला का उत्कर्ष-गोदान पृ. क्र. ४४